नई दिल्ली, शनिवार
10 दिसंबर, 2022
राजधानी
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 18+8=26

दैनिक जागरण

www.jagran.com

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

अधिसूचना जारी होते ही सदन बुलाने को समय मांगेगा नगर निगम 8

छेड़छाड़ करने वालों को अगले चौराहे से पहले ढेर कर देगी पुलिस : योगी 11

हर भारतीय मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत है, हमारा प्रयास है कि हम उनके जीवन को बेहतर बनायें

'कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों' इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है गौतम अदाणी ने। एक आम आदमी से आज देश के सफल उद्योगपति के रूप में खुद को स्थापित कर युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श बन चुके हैं। उनकी इस सफलता के सफर पर विशेष वार्ता –

सबसे पहले वह बात जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में है। बात आपके उस सफर की जिसमें हर दिन मि लियं स-बिलियंस डॉलर का जुड़ना अब सामान्य सा लगने लगा है।

उत्तर: एक नजरिए से तो यह महज आंकड़े हैं और इसके फेर में पड़ना हमारा लक्ष्य हरगिज नहीं है। महत्वपूर्ण यह होता है कि आपके द्वारा किया जा रहा कार्य समाज और देश के कितना काम आ रहा है। एक भारतीय होने के नाते मैं यह महसूस करता हूं कि पिछले कुछ समय से समूचे देश में यह भावना है कि हम अपने राष्ट्र की विकासशील से विकसित की श्रेणी में लेकर आएं। इस लक्ष्य को हासिल करने में मान जा सकता है कि तमाम जन की कोशिशों के बीच छोटा सा प्रयास हमारे समूह का भी है।

मान लिया कि दुनिया में सबसे अमीर बनने की रेस महज एक नंबर है, तो फिर आपको निरंतर उन्नति की प्रेरणा किससे मिलती है?

उत्तर: भारत एक लम्बी अवधि गुलामी में बिताने के बाद आजाद हुआ। सब कुछ नए सिरे से विकसित करने की जरूरत थी। बहुत पुरानी बात कहने का हकदार नहीं हूं, लेकिन 80 और 90 के दशक में जब हमने व्यापारिक क्षेत्र में कदम रखा, तो उस समय देश की जरूरत और उसकी दिक्कतों की भी बहुत नजदीक से महसूस किया। न हमारे पास पर्याप्त विकसित समुद्री पोर्ट थे, न एयरपोर्ट थे। सड़कों की हालत भी बहुत अच्छी नहीं थी। बिजली की मांग और आपूर्ति का परस्पर कोई तालमेल ही नहीं था। वहीं तकरीबन हमारे साथ ही नए सिरे से प्रगति के पथ पर चला चीन काफी तेज गति से आगे बढ़ रहा था। मेरी समझ में आया कि अभी हमारे देश में सबसे ज्यादा जरूरत एक बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने की है। संसाधनों की कमी नहीं है, लेकिन उनके सदुपयोग के संदर्भ में व्यवस्थाओं की जरूरत है। तबसे उस जरूरत की पूरा करने की कोशिश में ही जुटे हुए हैं।

आपकी यह कोशिश किस हद तक कामयाब हुई?

उत्तर: इसका बेहतर उत्तर तो शायद हमारे भारत की जनता ही दे सकती है। हम तो अपना काम कर रहे हैं। निजी तौर पर एक भारतीय होने के नाते मुझे आत्मसंतुष्टि है कि मैं और मेरा समूह देश के नवनिर्माण में यथासंभव अपना योगदान दे पा रहे हैं। इसको भी मैं ईश्वर की कृपा और बुजुर्गों के आशीर्वाद के तौर पर ही देखता हूं। मैं यह अपना सौभाग्य ही मानता हूं कि पिछले तीन दशक से सारे स्टेक धारक, निवेशक, सरकार, रेगुलेटर और देश के तमाम लोग हमारी कोशिश में सहयोग करते रहे हैं, हौसला दे रहे हैं।

लेकिन आपके आलोचकों का कहना है कि ये सब आपके प्रधानमंत्री मोदीजी से संबंधों की वजह से संभव हो सका है। आप क्या कहेंगे?

उत्तर: इस तरह की आलोचना करने वाले न तो मोदीजी को जानते हैं, न ही उनकी क्षमताओं की। दरअसल यह बात शायद इसलिए आती है क्योंकि मैं गुजरात से हूं और नरेन्द्र मोदीजी बरसों गुजरात के मुख्यमंत्री रहे हैं। दूसरों की तरह मुझे भी पता है कि वे पूरी तरह निष्पक्ष और ईमानदार हैं। सच बात तो यह है कि उनकी नीतियों की वजह से पहले गुजरात में और अब देश में बिजनेस करने के लिए अनुकूल वातावरण बना है और उसका फायदा हर तरह के कारोबार की भी हुआ। देश-प्रदेश की भी हुआ है। जहां तक निजी तौर पर लाभ की बात है तो मेरे समूह का कार्य देश के तमाम गैर-भाजपा शासित राज्यों में भी है जैसे राजस्थान, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, झारखंड, ओडिशा, इत्यादि इन सभी राज्यों में अलग-अलग पार्टियों की सरकारें हैं। हम उन सरकारों के साथ भी ठीक नीति और नीयत के साथ उनके सहयोग व समन्वय से कार्य कर रहे हैं। आप एक भी ऐसा उदाहरण पेश कीजिए जिसमें मेरी किसी कंपनी को बिना कॉम्पिटिटिव बिडिंग के कोई कॉन्ट्रैक्ट मिला हो।

राहुल गांधी लगातार आपको निशाने पर क्यों रखते हैं?

उत्तर: इसका जवाब मैं क्या दे सकता हूं? वह देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं, राजनेता हैं। वहीं मैं एक सामान्य कारोबारी हूं।

एक बड़ी आलोचना यह भी होती है कि आपके ग्रुप की कंपनियों पर कर्ज का ऐसा बोझ है कि बुलबुला फूटा तो बैंकों का बड़ा नुकसान होगा।

उत्तर: आपने यह बहुत अच्छा सवाल पूछा है। आपको पता ही है कि इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में काम करने वाली कंपनियों की काफी धन की जरूरत होती है। लिहाजा कर्ज लेना ही हमारे पास एकमात्र विकल्प होता है। अब अगर कर्ज की अवधि ज्यादा हो, अच्छी दरों पर मिले और उन पैसों से आप बहुत तेजी से तरक्की कर पा रहे हों, तो यह अच्छी रणनीति है। हमारे समूह पर पिछले 9 साल में कर्ज 11 फीसदी की रफ्तार से बढ़ा और कमाई उसके दोगुने यानी 22 फीसदी की रफ्तार से। तो बताइए, यह बढ़िया रणनीति है न? यही वजह है कि इन 9 सालों में मेरी कंपनियों के शेयर्स के भाव बहुत तेजी से बढ़े हैं और निवेशकों एवं शेयर होल्डर्स की भी अत्यधिक लाभ हुआ है। एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि पिछले 9 वर्षों में कर्ज और कर्ज चुकाने के लिए आय-जिसे EBIDTA कहते हैं, के अनुपात में लगभग 50% की कमी आई है। यह भी उल्लेखनीय है कि इसी समयकाल में ऋण में सरकारी और प्राइवेट बैंक का हिस्सा 84% से घट कर मात्र 33% रह गया है, अर्थात लगभग 60% की गिरावट आई है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि सारे आरोप आधारहीन हैं। इतिहास साक्षी है कि अदाणी ग्रुप द्वारा कर्ज चुकाने में डिफॉल्ट तो छोड़िए, कभी भी एक दिन का विलंब नहीं हुआ है। कंपनियों के वित्तीय स्वास्थ्य के आकलन में रेटिंग एजेंसीज का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। रेटिंग एजेंसीज की सबसे अच्छी रेटिंग सावरिन रेटिंग होती है। मुझे यह बताते हुए बड़ी खुशी है कि हमारी लगभग सभी अदाणी कंपनियों की सावरिन रेटिंग प्राप्त है – जो कि भारत सरकार की रेटिंग के बराबर है। जानने वाली बात यह भी है कि हमारे अलावा, भारत के किसी और समूह की इतनी सारी कंपनियों की सावरिन रेटिंग नहीं मिली है। कर्ज तो कोई मुद्दा ही नहीं है। ताज्जुब की बात है कि हमारी कंपनियों पर कर्ज की तो इतना हाइलाइट किया जाता है, लेकिन इस बात की चर्चा कभी नहीं होती कि पिछले तीन साल के दौरान हमें करीब 1,30,000 करोड़ रुपयों का निवेश मिला है। और वह भी दुनिया के सबसे बड़े निवेशकों से।

अब तक हमने ज्यादातर वही सवाल पूछे हैं, जो आलोचक उठाते रहते हैं। उन्हीं में से एक सवाल- आप ग्रीन एनर्जी वाली सबसे बड़ी कंपनी बनाने का दावा करते हैं, लेकिन आपका कोयले का भी काफी बड़ा कारोबार है। कुछ समय पहले आपने आस्ट्रेलिया में कोयले की खदान भी खरीदी है।

उत्तर: व्यक्तिगत तौर पर मैं ग्रीन एनर्जी का कट्टर समर्थक हूं, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए हमें ताप विद्युत परियोजनाओं की अभी भी आवश्यकता है। लेकिन धीरे-धीरे फासिल फ्यूल (जीवाश्म ईंधन) आधारित ऊर्जा का स्थान ग्रीन एनर्जी लेती जाएगी और शीघ्र ही, देश की ऊर्जा सुरक्षा में ग्रीन और क्लीन एनर्जी प्राथमिक स्रोत का स्वरूप ले लेगी। लेकिन तब तक, इस ट्रांजीशन के दौर में फासिल फ्यूल की भी भूमिका रहेगी इसीलिए, हमारा दूरदर्शी ध्येय क्लीन और ग्रीन एनर्जी के लिए है।

देश के बहुत सारे लोगों के लिए आप प्रेरणा के बहुत बड़े स्रोत हैं। आपके सफर के बारे में जान कर उन्हें बड़ी सफलता हासिल करने की प्रेरणा और राह मिलेगी।

उत्तर: मैं एक सामान्य पारिवारिक व्यक्ति हूं, मेरा बचपन भी सामान्य भारतीय की तरह ही बीता है। अभी भी हम संयुक्त परिवार में रहते हैं। उस परिवार में केवल रक्त संबंधी ही नहीं बल्कि मेरे सहकर्मी और दोस्त भी परिवार का ही हिस्सा हैं। मेरी कोशिश रहती है कि जो भी कार्य हमारे द्वारा किया जाए, वह केवल मेरे लिए ही नहीं, औरों के लिए भी काम आए। हमने जो भी कार्य किया है, अगर आप उसे सफलता का तमगा देना चाहें, तो उस यात्रा में इन सब लोगों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

देश में एक समय औद्योगिक घरानों का जिक्र होते ही जुबां पर नाम आता था टाटा-बिड़ला का। अब नाम आता है अदाणी और अंबानी का। इस बदलाव को आप किस तरह देखते हैं?

उत्तर: निःसंदेह, टाटा-बिड़ला देश के बेहद सम्मानित घराने रहे हैं और आज भी हैं। हम आज भी उनसे सीखते हैं। रिलायंस समूह के संस्थापक धीरूभाई अंबानी ने भी एक सामान्य व्यक्ति क्या कुछ कर सकता है, इसका उदाहरण पेश किया। उनका फर्श से अर्श का सफर सारे उद्योगपतियों के लिए, प्रेरणा है। मेरे लिए तो यह और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि मैं भी फर्स्ट जनरेशन एंटरप्रेन्योर हूं। मैंने भी अपना बिजनेस धीरूभाई की तरह जीरो से शुरू किया है। मेरा समूह इन तमाम औद्योगिक समूहों के प्रति भी आभार महसूस करता है क्योंकि हमने इनके अनुभवों से बहुत कुछ सीखा है।

गौतम अदाणी आज लाखों लोगों के लिए रोल माडल हैं। गौतम अदाणी के लिए भी कोई रोल माडल रहा है, यदि हां, तो कौन?

उत्तर: जी, बिलकुल हैं। और वह हैं श्रीकृष्ण। जीवन के किसी भी क्षेत्र में आपको चुनौती का सामना करना पड़े, श्रीकृष्ण के चरित्र में आपको समाधान मिल ही जाएगा। वे संघर्ष से सफलता और संकट से समाधान तक की यात्रा का पर्याय हैं। जब कभी किसी उलझन में होता हूं, उन्हीं का स्मरण करता हूं।

मौजूदा दौर में भी कोई प्रेरणा स्रोत हैं?

उत्तर: आर. के. लक्ष्मण के कार्टून वाले आम आदमी को याद कीजिए- उनकी दिक्कतों, आकांक्षाओं, जोश, मायूसी, उल्लास, उनके सारे इमोशंस। मैंने उन सारी भावनाओं को जिया है। उन्हें काफी करीब से देखा है। अपनी जिंदगी में, अपने परिवार के साथ, अपने दोस्तों के साथ। इसलिए, हर भारतीय मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्हीं की बेहतरी के लिए हम सपने देखते हैं और उन्हें पूरा करने में लग जाते हैं।

> मेरी सारी कंपनियों के सीईओ स्वतंत्र हैं, और मेरा उनके डे-टू-डे कार्यों में किसी भी तरह का कोई हस्तक्षेप नहीं। मेरी भूमिका रणनीति तक ही सीमित है। एनडीटीवी के केस में भी ओनर्स और एडिटोरियल के बीच में बड़ी स्पष्ट लक्ष्मण रेखा रहेगी।

देश में स्टार्टअप कल्चर तेजी से बढ़ रहा है। जो नए सपने देख रहे हैं, उनके लिए आपकी क्या सलाह है?

उत्तर: जिंदगी में कोई शार्टकट नहीं होता। अपने तभी पूरे होते हैं, जब आप अपने सपनों पर पूरा भरोसा करते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। सफलता-असफलता तो जीवन का हिस्सा है। असफलता से डरना या झुकना नहीं है। बचपन में शिवमंगल सिंह सुमन की इन पंक्तियों ने मुझ पर अमिट छाप छोड़ी थी:

'क्या हार में क्या जीत में,
किंचित नहीं भयभीत मैं,
संघर्ष पथ पर जो मिले,
यह भी सही, वह भी सही,
वरदान मांगूंगा नहीं।'

देश की अर्थव्यवस्था पर लौटते हैं। महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद हुए संकट से क्या हम पूरी तरह से उबर पाए हैं?

उत्तर: महामारी के समय की ही याद कीजिए, क्या किसी को इतने सफल वैक्सिनेशन प्रोग्राम की उम्मीद थी? लाकडाउन के बाद आर्थिक संकट से उबर पाना क्या आसान लगता था? ऐसा लगता था मानो हैल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर पूरी तरह चरमरा जाएगा। लेकिन ऐसा कुछ हुआ क्या? रूस-यूक्रेन की जंग के बाद पूरी दुनिया में ऊर्जा का संकट है, खाद्यान्न का संकट है, करेंसी का संकट है, और मुद्रास्फीति बढ़ी हुई है, लेकिन अपना देश इन तमाम संकटों से बचा हुआ है। यह देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती का सबूत है। विदेशी निवेशक पैसे लगाने के लिए लाइन में खड़े हैं। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर उड़ान भरने वाला है, क्योंकि इसके लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर बनकर तैयार है। सर्विस सेक्टर में हम पहले से ही आगे रहे हैं। अब उत्पादन के लिए तमाम अंतरराष्ट्रीय कंपनियां भारत आ रही हैं। भारत विश्व पटल पर उम्मीद का दूसरा नाम है। जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिली है। भारतीय होने के नाते हम सब इस बदलाव पर गर्व कर सकते हैं।

आपकी मीडिया में एंट्री पर सवाल न हो तो इंटरव्यू अधूरा रह जाएगा। आपके एनडीटीवी अधिग्रहण को कुछ लोग प्रेस फ्रीडम पर लगाम कसने की कोशिश के तौर पर भी देख रहे हैं।

उत्तर: कारपोरेट जगत का मीडिया में प्रवेश और मीडिया चलाने वालों का दूसरे कारोबार में पैर फैलाना, यह तो सालों से होता रहा है। सिर्फ भारत में ही नहीं, पूरी दुनिया में। लेकिन चूंकि यह गौतम अदाणी कर रहे हैं, तो शोर तो होना ही है। मैंने पहले भी स्पष्ट किया है की एनडीटीवी अधिग्रहण एक सामाजिक जिम्मेदारी है, न कि लाभ के लिए किया गया अधिग्रहण। हिंदुस्तान में बहुत अच्छे मीडिया ग्रुप्स हैं लेकिन मेरी चाहत है कि हम एनडीटीवी के माध्यम से एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के ब्रांड का निर्माण करें। एनडीटीवी एक बहुत ही अच्छा ब्रांड है और उसमें वह सारे गुण मौजूद हैं जो एक अच्छे ब्रांड में होने चाहिए। आवश्यकता है, तो सही सोच, रणनीति, तकनीक, वित्तीय और मानव संसाधन की जिसके माध्यम से एनडीटीवी अपनी काबिलियत के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय स्तर का मुकाम पा सके। मैं यह भी बताना चाहूंगा कि मेरी सारी कंपनियों के सीईओ स्वतंत्र हैं, और मेरा उनके डे-टू-डे कार्यों में किसी भी तरह का कोई हस्तक्षेप नहीं। मेरी भूमिका रणनीति तक ही सीमित है। एनडीटीवी के केस में भी ओनर्स और एडिटोरियल के बीच में बड़ी स्पष्ट लक्ष्मण रेखा रहेगी।

आखिरी सवाल, समाजसेवा या जन-कल्याण से जुड़े कामों की आपके समूह में क्या जगह है?

उत्तर: यह तो आपने वह सवाल पूछ लिया जो मेरे दिल के सबसे करीब है, यह सवाल आपको सबसे आखिरी में नहीं, बल्कि पहले पूछना चाहिए था। समाज सेवा एवं जन-कल्याण हेतु हमने अदाणी फाउंडेशन की स्थापना की है। फाउंडेशन के माध्यम से हम देश में परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए, अपने 60वें जन्मदिन पर मैंने अपने परिवार से एक विचार साझा किया कि देश के सामाजिक क्षेत्र को 60,000 करोड़ रुपये की भेंट देना चाहता हूं। मुझे खुशी है कि मेरे परिवार ने सहज ही सहमति दे दी। जिसे आप शिक्षा, स्वास्थ्य, और स्किल डेवलपमेंट जैसे क्षेत्रों में मूर्त रूप लेते हुए देखेंगे। इस मुहिम के जरिए हम देश के हर आम आदमी के दुखों को बांटने की कोशिश करेंगे। मेरे नेशन बिल्डिंग प्रोजेक्ट का यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

क्या आप अदाणी फाउंडेशन की कुछ उपलब्धियों के बारे में बता सकते हैं?

उत्तर: अदाणी फाउंडेशन अपने निरंतर प्रयासों से एक सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन लाने में जुटा है। फाउंडेशन की चेयरपर्सन प्रीति अदाणी के सबल नेतृत्व में आज फाउंडेशन दुनिया के सबसे सक्रिय और दूर-दराज तक एक सकारात्मक सामाजिक प्रभाव लाने वाले कुछ संगठनों में से एक है। अगर आंकड़ों की बात करें तो फाउंडेशन ने भारत के कोने-कोने में सपोर्ट प्रोग्राम के माध्यम से 2,409 गांवों में लगभग 40 लाख लोगों की सहायता की। स्वच्छाग्रह, सुपोषण, सक्षम, उड़ान और उत्थान जैसी कई पहलों से हजारों बच्चों, युवा, महिलाओं और परिवारों की एक नई राह दी। शिक्षा, स्वास्थ्य, सस्टेनेबल लाइवलीहुड और रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर में एक सकारात्मक बदलाव लाने और अनेक जिंदगियों को बेहतर बनाने के अटल इरादे ही अदाणी फाउंडेशन की पहचान है। अदाणी फाउंडेशन का मूल लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना है, जो सबके लिए एक समान हो और समन्याय हो।

> सफलता-असफलता तो जीवन का हिस्सा है। असफलता से डरना या झुकना नहीं है। बचपन में शिवमंगल सिंह सुमन की इन पंक्तियों ने मुझ पर अमिट छाप छोड़ी थी:
> क्या हार में क्या जीत में,
> किंचित नहीं भयभीत मैं,
> संघर्ष पथ पर जो मिले,
> यह भी सही, वह भी सही,
> वरदान मांगूंगा नहीं।

गौतम अदाणी ने अपना 60वां जन्मदिन मुंद्रा स्थित अदाणी विद्यामंदिर के बच्चों के साथ मनाया। बच्चों की मुस्कान में उन्होंने पाई अपने जन्मदिन की सबसे कीमती भेंट।

दैनिक जागरण एक्सक्लूसिव

****